किशोरों के लिए कविताएं

समुद्र के आँसू

— 'मुकुल'

समुद्र के आँसू

[१९८४-८६ की कविताएँ]

अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल'

मुद्रकः- लक्ष्मी प्रेस, गाँधी पथ, सहरसा

[C] 'मुकुल'

समुद्र के आँसू (कविता)

अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल'

SAMUDRA KE ANSU (Poems)

AMARENDRA KUMAR 'MUKUL'

प्रथम संस्करण— १९८७ मूल्य-११/-

परिशंसा

कविता को 'चिरपुरातन' और 'चिरनवीन' कहा गया है, और फिर उसे 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' भी माना गया है, राग - द्वेष, सुख - दुख, प्रेम - घृणा, दया - माया आदि मानव के समग्र मनोभाव, जो पुरातन युग में थे, वे आज भी यथावत हैं । इसलिए, सदातन मनोभावों के विश्लेषन की दृष्टि से लिखा गई कविता पुरानी होने पर भी नई बनी रहती है । और फिर, यथार्थ सत्य के कल्याणकारी पक्षों को सुन्दरता के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता के कारण कविता 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का प्रतीक भी होती है ।

किन्तु, आधुनिक आलोचकों की जनवादी दृष्टि से वही कविता सार्थक, सम्प्रेषणीय या प्रासंगिक होती है, जो समयुगीन व्यथा - कथा को प्रतिरूपित करती है, या वर्त्तमान व्यवस्था की विसंगति को सही - सही प्रत्यंकित कर सकती है । आज का निर्बन्ध नया कवि अपनी रचना - प्रकिया में निर्बन्ध अभिव्यक्ति का अकांक्षी होता है । इसलिए, अपनी रचना में वह छन्द की सीमा से मुक्त होकर यथार्थ को कुरूपता को साग्रह, कभी - कभी असंयत हो-कर भी रूपायित करता है । कदाचित् प्रासंगिकता या सम्प्रेषणीयता के लिए इसे वह आवश्यक समझता है ।

हिन्दी के उदीयमान कवि श्री अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल' कौ कविताओं की रचना - प्रकिया या स्थापत्य - निरूपण की केन्द्रीय स्थिति मध्यममार्गीय है । इन्होंने अपने प्रस्तुत काव्य - संकलन 'समुद्र के आँसू' में, अवश्य ही, मुक्त छन्द का प्रयोग किया है, किन्तु कविताएँ कहीं भी असंयत भावों से ग्रस्त नहीं हुई हैं और न यथार्थ की कुरूपताओं से विकृत ही । कुछ कविताओं (जैसे :— 'सच्चिदानन्द', 'अनामिका', 'देखो वसन्त आ रहा' आदि) के मूल भाव तो सदातन हैं, किन्तु कुछ कविताएँ (जैसे :- 'दहेज - प्रथा', 'बेचारा ग्रेजुएट' 'आतंक' आदि) वर्त्तमान व्यवस्था और मानब - जीवन की विसंगतियों को संकेतित करती हैं । इस प्रकार, कवि मुकुल ने पुरानी और नई पीढ़ियों की समन्वय - रेखा के मध्य रहकर यथार्थता को उजागर बनाये रखने की अन-

बरत चेष्टा की है, इसलिए जगह - जगह इन्होंने निर्जीव आदर्शों और खोखले सिद्धान्तों को तीक्ष्णता के साथ अपदस्थ किया है। समाज, जीवन और आदर्शों की असंगति की आलोचना ही इनकी काव्यगत विशेषता है।

आवर्णक वचोभंगी तथा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति से संवलित कवि मुकुल की कविताएँ भासिक अभिव्यंजना की दृष्टि से प्रायः शैथिल्य - रहित हैं। कवि के लिए अपेक्षित काव्यगुण - यथार्थ अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति का भी इस संकलन में प्रायः अभाव नहीं है। ज्ञातव्य है, कवि मुकुल ने यह पहली काव्ययात्रा की है, फिर भी, कहना न होगा कि इनकी यह काव्ययात्रा, कतिपय सहज स्खलनों के बावजूद, ततोऽधिक सफल हुई है।

मेरी हार्दिक कामना है, कवि मुकुल अपनी रचना यात्रा का सातत्य बनाये रहें और नित्य नई सारस्वत कोशशिला स्थापित करें।

पूर्व - सम्पादकः 'परिषद - पत्रिका'
बिहार- राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना-४

□ श्रीरंजन सूरिदेव
२-५-८७

डॉ० कुमार विमल
पूर्व निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
पूर्व अध्यक्ष, बिहार लोक सेवा आयोग, पटना
पूर्व विजिटिंग प्रोफेसर (हिन्दी), मगध विश्वविद्यालय
अध्यक्ष, हिन्दी प्रगति समिति, बिहार एवं
कुलपति, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय

दो शब्द

मैंने कई साल पहले अपनी एक कविता में लिखा था कि समुद्र विधाता द्वारा बहाये गए आँसू का संग्रह है। इस अश्रुप्रवाह का कारण अब ओछी साबित हो रही उसकी सृष्टि पर उसका पछतावा है। मुझे पता नहीं, आँसू का स्वाद कैसा होता है और समुद्र के खारे जल से उसके स्वाद में कितनी समानता है?

यह एक संयोग ही है कि कवि "मुकुल" मुझसे अपने इस कविता - संग्रह के लिए दो शब्द लिखवाना चाहते हैं, जिसका नामकरण उन्होंने किया है—"समुद्र के आँसू"। यह कल्पना और भी ललित एवं दूरारूढ़ है।

इन कविताओं में एक नये कवि द्वारा पंख तोलने का प्रयास है। इसमें संदेह नहीं कि कवि की संवेदनशीलता अपने समय, समाज और पूरे परिवेश के प्रति सजग है। उसे रेल की सीटी सुनकर सहसा अपना गाँव याद आ जाता है, उसे उन थके - हारे स्नातकों को देख कर भी करूणा आ जाती है, जो वर्षों से बेरोजगारी की रहट खींचते - खींचते आदमी से बैल बन गए हैं और उसे कोई अनामिका भी सपने में भेंट दे देती है। इस तरह अभी कवि अपनी वय के अनुसार कटु यथार्थ और रमणीय कल्पना - दोनों के प्रति उत्सुक है। आशा है, जब कवि की सृजन - यात्रा आरम्भिक प्रयासों को पार कर प्रौढ़ि - प्रकर्ष की ओर बढ़ेगी, तब उसकी रचनाएँ हमें और भी प्रीत कर सकेंगी।

९६, एम० आई० जी० एच०
लोहियानगर, पटना - २०

□ डॉ० कुमार विमल
१९-१०-८७

गंगा प्रसाद सिंह
प्राचार्य,
राजकीय इन्टर महाविद्यालय,
सहरसा

आशीर्वचन

चि० मुकुल को काव्य - प्रतिभा की प्रथम, प्रसन्न प्रभा का प्रस्फुटन पिता को पुत्र के प्रसंग की सुदूर अतीत में धटी एक घटना का स्मरण करा रहा है। इसके जन्म के थोड़े समय बाद एक पंडित जी ने मुझसे कहा था कि इसके जन्म के लग्न एवं मुहुर्त्त कुछ वैसे ही लगते हैं जैसे महाकवि तुलसी के जन्मकाल के समय के थे। यह बात तब से आज तक मेरे मस्तिष्क के किसी सूने कोने में सुषुप्तावस्था में पड़ी थी। आज 'समुद्र के आँसू' के प्रकाशन के समय उसकी अभिव्यक्ति की मांग जोर पकड़ रही है। मैंने कभी भी 'मुकुल' की काव्य - रचना की प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष प्रोत्साहन नहीं दिया, बल्कि उसे इस दिशा में मेरा स्नेहिल प्रतिरोध ही मिलता रहा।

आज मुझे खुशी है कि पिता के स्नेहिल प्रतिरोध के प्रवाह के प्रतिकूल पुत्र की काव्य - प्रतिभा का भँवर ऊपर की ओर चढ़ता गया।

'मुकुल' के धैर्य और धुन के वृन्त पर खिले इस पुष्प को साहित्य-जगत की झोली में जगह मिले, यही मेरी कामना है।

प्राचार्य निवास,
सहरसा

— गंगा प्रसाद सिंह
२१-१०-८७

हिमालय से
दृढ, अडिग पिता के
चरण कमलों में,
जिसकी ओट में
मेरे मानस का थका पंछी
क्षणिक विश्राम पाता है !

जन्म - १९६६
ग्राम - तीर्थकौल
पोस्ट - संदेश
जिला - भोजपुर (शाहाबाद)
शिक्षा–बी० ए० (आनर्स)
छात्र–एम० ए० (रा० विज्ञान)

—— मेरा विद्यार्थी जीवन अभी समाप्त नहीं हो पाया है। मैंने सोचा था, कि इस अवधि में खुद को प्रकृति, समाज तथा काल से तटस्थ रखूँ। पर मेरा वश इस शरीर पर तो है, मेरी आत्मा पर नहीं। जब कभी मैंने भावनाओं को रोकना चाहा, अंतरात्मा में किसी की वाणी गूँज उठी-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं; समय लिखेगा उनका भी अपराध।

फिर हिम्मत ना पड़ी, कि अपराधियों की संख्या में एक और इजाफा करूँ और जब मैंने सूक्ष्म का स्थूलीकरण किया, तो दोस्तों ने कहा - अरे, तुम तो कविता करने लगे। प्राकृतिक परिवेश की सुन्दरता, सामाजिक विकृति, नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा शून्य की सर्वव्यापकता ने, मुझे जहाँ कहीं छुआ, प्रभावित तथा प्रवाहित किया, वो सामने है। भावनाओं की परिवेश से संलग्नता सिद्ध करती है, कि आज नहीं तो कल, मेरी तटस्थता का तिलस्मी तेवर टूटेगा और सही अर्थों में मैं अपनी कविताओं को जी सकूंगा, जीऊँगा।

यदि मेरी किसी पंक्ति ने आपको कहीं से झकझोरा, आपके अंतस को उकेरा तथा आपकी तटस्थता को तोड़ा तो, यही मेरी सफलता और सार्थकता होगी।

० ० ०

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान डॉ० कुमार विमल तथा श्रीरंजन सूरिदेव जी, प्रो० डा० रूद्रप्रताप सिंह तथा प्रो० अरूण कुमार सिंह का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा सारस्वत मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही मैं आभारी हूँ, श्री तूफान चन्द्र जोश, बड़े भाई वासुदेव मिश्र, प्रो० सुनील कुमार झा तथा अपने मित्रों- कर्ण, जितेन्द्र, मृत्युंजय, राजेश, शैलू आशुतोष दीपक तथा चन्द्रशेखर का जिन्होंने समय-समय मुझे स्नेह, सलाह, आलोचना तथा सहयोग देकर पथ पर अग्रसर किया।

१५-४-८७

—— अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल'

क्रम

माँ सरस्वती	१
स्वरूप कविता का	१
समुद्र के आँसू	२
सत्यं शिवं सुन्दरम्	४
एक लम्हा	५
निर्माता	६
युवा बेरोजगार	७
दूब	७
खबर	८
चुनाव	९
मेरा शहर	१०
कीमत	११
देश भक्त	१२
महानता के प्रतिमान	१३
गुलाब की भूल	१४
सुफेदी	१५
माँ की ममता	१६
रोल	१७
सच्चिदानन्द	१८
देखो वसंत आ रहा	१९
बैलगाड़ी	२०
अपना गाँव	२१
सच - झूठ	२२
सावन की घटा	२२
तुम	२४
अनामिका	२५
गीत	२६
पागल	२६
जिजीविषा	२७
गीत	२७
युवा	२८
कदम बढ़ाए चल	२९
हम	३०
बेरोजगार	३१
दहेज प्रथा	३२
वीरता	३४
आदमी	३५
बेचारा ग्रेजुएट	३६
बाढ़	३७
ख्वाबों की दुनिया	३८
गुनाह	३९
दिमाग	४०
सवालात	४१
आतंक	४२
हँसी का टुकड़ा	४३
सवाल	४४
अशक्त	४४
अहसास	४५
जागो	४६
युवकों के प्रति	४७
तत् त्वम् असि ।	४९

चरैवेति् । **चरैवेति् ।**

लो
तुम्हे मैं फिर
नया
विश्वास देती हूँ,
नया
इतिहास देती हूँ !
कौन कहता है
कि कविता मर गयी ?
— 'भारती'

माँ सरस्वती

□

माँ सरस्वती ! वरदान दे
कि हम सदा फूलें - फलें
अज्ञान सारा दूर हो
और हम आगे बढ़ें
अंधकार के आकाश को
हम पार कर ऊपर उठें
अहंकार के इस पाश को
हम काट कर के मुक्त हों
क्रोध की अग्नि हमारी
शेष होकर राख हो
प्रेम की धारा मधुर
फिर से हृदय में बह चले
माँ सरस्वती ! वरदान दो
कि हम सदा फूलें - फलें !

*

स्वरुप कविता का

□

स्वप्न जो टूटा
तो क्या देखता हूँ
खड़ी है कोई
घूँघट में शरमाई
मेरे मन-मंदिर में
बहुतों भाव आए

कल्पना और प्रेरणा ने
किया अपना काम
स्थिर दृष्टि से मैंने
निहारा ।
सारा ताम - झाम
लेखनी से
उसका घुँघटा उठाया
सोए अपने कवि को जगाया
मधुर भावों को निरखा
सिकुड़नों को भी परखा
सहज कॉपी पे लाया
सजाया क्रम से उनको
पिलाया मधु कण - कण को
बनी तब कविता मेरी
सुनें अब क्या है देरी !

*

समुद्र के आँसू

□

एक दिन मैंने
पूछा समुद्र से
देखा होगा तूने, बहुत कुछ
आर्य, अरब, अँग्रेजों का
उत्थान - पतन
सिकन्दर की महानता

मौर्यों का शौर्य, रोम का गौरव
गये सब मिट, तू रहा शान्त
अब, इस तरह क्यों घबड़ाने लगा है ?
अमेरिका, रूस के नाम से
पसीना
क्यों, बार - बार आने लगा है ?
मुक्ति सुनी होगी तूने, व्यक्ति की
बुद्ध, ईशा, रामकृष्ण
सब हुये मुक्त
देखो तो आदमी पहुँचा कहाँ !
वो ढूँढ़ चुका है, युक्ति
सारी मानवता की मुक्ति का
अरे, रे, तुम और घबड़ा गये
एक बार, इस धराधाम की भी
मुक्ति देख लो
अच्छा तुम भी मुक्त हो जाओगे
विराट शून्य की सत्ता से
एकाकार हो जाओगे
लो, तुम भी बच्चों सा रोने लगे
मैंने समझा था, केवल आदमी रोता है
तुम भी, अपना आपा इस तरह खोने लगे !

*

सत्यं शिवं सुन्दरम्

□

सबेरा सदा
सुहावना होता आया है
हर चीज सुन्दर है
नींव में जिसकी
असुंदर है कुछ
गोबर पर का गुलाब
प्यारा होता है
युद्ध के बाद की शांति
न्यारी होती है
होगी क्यूँ नहीं
निरीहों की कब्र पर
खड़ी है जो
हाँ, अशेष का चिह्न
शेष रह जाता है
काँटा प्रमाण है
ठूँठ के पास की हरियाली
छिपा नहीं पाती
कभी तूफान गुजरा था
हम अनदेखा करते हैं इसे
जहाँ कहीं, शक्ति घनीभूत हुई है;
बिस्फोट हुआ है
शांति दीर्घजीवी है जरूर
आँधी के, क्रांति के
पूर्व शांति, पश्चात शांति

सत्य यही है, शिव सही है
जो असत्य को नष्ट करता है, शेष सुन्दर है !

✶

एक लम्हा

□

क्षितिज की ओट से
निकले सूरज ने
तम का काम, किया तमाम
पर बीत चुका था एक
उदास लम्हा
खो गया था कुछ
किसी की आशाओं का दरख्त
सूख चुका था
किसी दुर्बल की अस्मत
गरीब की रोटी
प्रेमी का प्यार
सबको चट कर गया
चिराग तले का घना अंधकार
शेष थी बस
जिन्दगी की लाश
जो ताबूत में समाती
चली जा रही थी
जहाँ कुछ नहीं था शेष
सिवा अँधेरे के !

✶

निर्माता

□

डाली थी एक दिन
इस महल की नींव मैंने
बाकी था, एक - एक ईंट को जोड़ना
करना था उसे पूरा
बालू तथा कंकड़ में
अपना लहू सान
हड्डियों को गला, फूँका इसमें प्राण
मंजिल दर मंजिल, बनाया कंगूरा
पर अपना सपना भी, क्या हुआ पूरा ?
शंख बजे, पूजा हुई भगवान की
बँटा मित्रों में प्रसाद
पर, प्रासाद का निर्माता
मैं, नीचे झोपड़ी में रेत पर
रोटी को लड़ते लड़कों का
झगड़ा था छुड़ाता
रोती लड़की का पेट, भरता था लोरी से
कैसा है तेरा न्याय, ओ विधाता !
माना, मुझे कुछ नहीं आता
मैं हूँ अबोध, तू तो है सुबोध
बस मेरे लिये, क्या खाली नहीं तेरी गोद ?
क्या इसी लिये घंटियाँ टनटनाता हूँ ?
टेकता हूँ माथा रोज !

✶

युवा बेरोजगार

□

ये युवा बेरोजगार
हाथ - पाँव सलामत
खड़े लूलों - लंगड़ों से बेकार
हट नहीं सकते लीक से
माँगनी पड़े, चाहे भीख भी
आशा का एक ही आधार
क्या - क्या करे सरकार
हैं सब स्नातक - स्नातकोत्तर
अनपढ़ मजदूर जिनसे बेहतर
सारी समस्याओं का हल
एक इन्हें सूझता
क्रान्ति का अर्थ, हर बेरोजगार बूझता !

✶

दूब

□

जबसे पैदा हुई मैं
दबती रही सदा, पैरों नीचे
हारी नहीं कभी भी
दबावों को सहती
बढ़ती रही लगातार
समूल उखाड़ने की कोशिश

की गई कई बार
फिर भी, मरी नहीं मैं
बेहोशी के टूटते
हो गई, फिर से
हरी - भरी !

✶

खबर

□

मन्दिर के द्वार पर
ठिठुरती भिखारिन माँ के
दुग्धाभाव से मरे
बच्चे की चीख सुन भगवान जागे
जब तक पूछते,
क्यूँ रो रहा है ओ अभागे
भक्त ने भर दिया मुख बाल्टी भर दूध से
औ, भगवन के देख लाल नयन क्रुद्ध से
मनोभाव ताड़ बोला भक्त
स्वामी, आँखों में क्यों आ गया है रक्त
स्वप्न कोई देखा दुःखद
देखें वातावरण कितना सुखद
छोड़ें चिन्ता सोयें आप
अभी शुरू किया अखंड जाप
जब हैं हम भक्त जन

न करें कोई फिक्र भगवन
स्वामी तबतक सो चुके थे
सुध - बुध सारा खो चुके थे
शंख की आवाज बीच भिखारन की आह दब गई
शहर में शीत से मरने वालों की संख्या
एक और बढ़ गई !

✶

चुनाव

□

चुनाव, चुनाव, चुनाव
लो हो गया शुरू
इंसानों का मोल - भाव
आज फिर बनी है
बेकारों की सरकार
सड़कों पर दौड़ते, पोस्टर लगे मोटर कार
बरसों बाद एक बार
मिलता है मौका
जनता को दिया जाता भरपूर धोखा
देखिये तो उनकी शान
आज कुत्ते बिल्ली भी चल रहे सीना तान
बैनरों से सजी गाड़ी
लगती पारचून की दुकान
लग रहे नारे
चुनावी मोहरों के शिकार होते सज्जन बेचारे

लाउडस्पीकरों की आवाज
फाड़ रही कान
जाने कितने अभिमन्यु की जाती है जान
इन चक्रव्यूहों में फँसकर
हो जाते कितने अनाथ
इन हथकंडों के दल - दल में धँसकर
होता शहीद कोई, सेहरा किसी के सर
जनता देती जान
नेता हो जाते अमर !

*

मेरा शहर

□

ऐ मेरे शहर
तू क्यूँ बदलता जा रहा ?
समझ नहीं आता
ये जीवन की प्रक्रिया है
या कि नित दिन तू मरता जा रहा
ये गगनचुम्बी मीनारें
जुड़ी हैं रक्त से जिनकी दीवारें
ये लम्बी चौड़ी सड़कें
गरीब जहाँ मौत से दिन - रात लड़ते
बड़े - बड़े गोदाम, वहां चूहे करते आराम
काली धुँआती चिमनियाँ,
मौत की टहनियाँ

ये क्या है ?
आदमी - आदमी से दूर
सब अहं के नशे में चूर
इस निर्माण के नाम पे
क्यूँ टूटता जा रहा ?
झूठी सभ्यता का नारा दे
क्यूँ खुद को भरमा रहा ?
प्रगति
विनाश का रास्ता नहीं
ढोंग और दिखावे से
इसका कोई वास्ता नहीं !

*

कीमत

□

जब तुम, सुन्दर सपनों में गुम
बैठे थे एयरकुल मकान में
टेपरिकार्डर का माईक लगाये अपने कान में
तभी आये तेरे नौकर अमले
दी खबर कोई बेच रहा गमले
रुपये में दो, सो तुमने कहा
क्या खड़ा कर दिया बाजार
जाओ ले आओ, यदि रुपये में दे चार
कितनी आसानी से तूने, कह दी ये बात
उसने मानी भी

क्यूँकि, नहीं जानते तुम
कैसे कटी उसकी रात
भूख को लोरी दे सुलाते
पेट की ऐंठन
भजन गा मिटाते
नहीं देखा तूने
दोपहरी में जेठ की
उसके सिर के साथ समकोण बनाते
सूर्य की किरणों को
क्यों के, तुम्हारी आँखों पे
धूप का रंग बदलने वाला
गॉगल्स चढ़ा था !

✶

देश भक्त

□

आज देश को
है भक्त की जरूरत
संवारे जो उसकी
लथ - पथ सूरत
हटाए गुबार, गर्द
किसी भी वार को
आगे आ सीने पे ले
ऐसा जवाँ मर्द, जो
हँसते - हँसते गरल पीले

दर्द को सहे
तूफानों में अडिग
पर्वत सा रहे
धारा के विरूद्ध जो
हाथ - पाँव चला सके
काल के पंजों से
जोर आजमा सके
देश द्रोहियों का
गलाधर दबा सके
जाए देश सेवा में मर
पर ना थके !

✶

महानता के प्रतिमान

□

पैदा हुये यहाँ
महान लोग ढेरों
गाँधी, नेहरू, सुभाष
अन्य बहुतेरों
जिन्दगी में अपनी किया बहुत काम
वंशजों के हित त्यागे प्राण, किया कल्याण
पीछे छोड़ गये, ढेर सारा काम
जैसे - प्रतिमा स्थापन के पीछे हो
आँख मुंद जय गान
गरीब मुफ्त गीत सुनें,

मनमें उनकी विद्वता गुणें
अफसर औ उनके मातहत खाँयें खूब मिष्ठान्न
बने टेन्डर मिले ठीका
ताकि ले जाया जा सके
उनके सिद्धान्तों को सादर श्मशान
उजड़े झोपड़ पट्टी बसाने के नाम
शोक व्यक्त करने को मिले एक दिन की छुट्टी
ताकि हम बनायें प्लान
कैसे मिटाया जाए उनके पैरों के निशान
कैसे बीते वो दिन हो कैसा प्रोग्राम
डिस्को कैबरे डाँस हो, आरती नृत्य के नाम
बुद्धिजीवि सिद्ध कर सकें खुद को
चापलूस, चतुर, बेईमान
इधर बन रहे महानता के नये प्रतिमान
दो चार जान लें कुछेक सिर फोड़ें
दुश्मन बनायें हजार
प्राण भय सताने लगे तो
मँच पर चढ़ चिल्लायें बार - बार
चिन्ता नहीं यदि देश हित में जायें मेरे प्राण
आप भी करेंगे अभिमान
पैदा होते हैं यहाँ नित कितने लोग महान !

✶

गुलाब की भूल

□

ऐ गुलाब के फूल

क्यूँ इतरा रहा खुद पे
कर रहा है भूल
सत्व सोखा मही का, धूप खायी
पिया शवनम की बूँद
तुझे बढ़ाने को खत्म किया
जड़ से घास और फफूंद
तेरी खातिर दुश्मनी की शोख नौजवानों से
नहीं तो, क्या कभी बनता
तू कली से फूल ?
कोड़ा आस पास की मिट्टी
हटाये पत्थर और गिट्टी
बड़ा किया तुझे सींच
पर मेरी आँखों में झोंक धूल
गड़ा ही दिया तूने शूल !

✶

सुफेदी

□

ऐसे ना दौड़ो
सुनहले सपनों पीछे
दृष्टि भ्रम है इन्द्र धनुष
कुछ भी ना पड़ेगा तेरे हिस्से
नीला, पीला, हरा
सब
छोड़ देंगे साथ

शून्य में सुफेदी
बस करेगी बात
सादी सच्चाई ही
बटाएगी हाथ
कटेगी
कष्ट की रात
स्वच्छ शुभ्र शीतलता
कर लेगी
सबको आत्मसात !

*

माँ की ममता

□

माँ तेरी ममता
की क्या समता ?
बचपन में सिर में तेल ढार
अच्छे कपड़ों में मुझे संवार
भेज देती है खेलने को
बच्चों के संग मचलने को
औ, जब भी रोता मैं आता हूँ
आँचल में ढ़ंक तू मुझको
गहरी नींद सुलाती है
देख विहँसता मुझे, तेरी आँखें
फूली नहीं समाती हैं

कुछ और बड़ा होने पे जब
स्कूल चला मैं जाता हूँ
लौटते तेरी आँखों को राहों में अपनी पाता हूँ
खुशी कितनी होती मुझको तब
जाने क्या ये सारा जग ?
जीत मिले या हार मुझे
इससे मतलब है नहीं तुझे
हर हाल में गले लगाती है
मेरा उत्साह जगाती है
फिर आगे पढ़ने को जब बाहर जाना पड़ता है
तू रात रहे जग जाती है
मीठे पकवान बनाती है
हँसती आँखों कर विदा मुझे
पीछे फिर कितना रोती है
पत्रों को पढ़ - पढ़ करके
आंचल सदा भिगोती है
पर क्या मैं भी तुझको
याद कभी कर पाता हूँ !
तुझको रोता छोड़ जमो पे
सपनों में खो जाता हूँ !

*

रोल

□

स्वप्नों के संसार से

सत्य की धरती पे
जब पड़ेंगे पाँव
पता चलेगा खुद
कैसी होती है, जिन्दगी की धूप - छाँव ?
सिर का पसीना जब
टेहुने के नीचे जाने लगें
खुरदरे पैर, जब रूखड़ेपन को लजाने लगें
तब तुझे दिखेगा, के दुनिया गोल है
नाचती धरती पे
आदमी का क्या रोल है !

✶

सच्चिदानन्द

□

जब
मन की उबन
उठान पे होती है
अचानक
अहसास होता है
कि
हृदय से चली ठंढ़ी धारा
बदन के पोर - पोर से
बाहर झर रही है
और
अमृत में डूब

जब मैं उबरा
तो सारी कुंठाएं
धुल चुकी थीं
आनन्द के सागर में
शेष बस बचा था
सत्य - चित - आनंद !

✶

देखो वसंत आ रहा

□

रात्रि के अंतिम प्रहर में
पछिया ने सोये से सहसा मुझको जगाया
इशारे से, घर के बाहर बुलाया
कान में मेरी तब उसने धीरे कहा
सुनो बात मेरी, खोये हो तुम कहाँ
रूठ करके चल दिये देखो ये तारे चमकते
चाँद भी घर को चला तेरो ही राह तकते
अभी तक तू क्यों सोया हुआ था भला ?
जागो और देखो तो वसंत है निकल चला
कोयल रूक - रूक के देखो है कूक रही
वसंती है किधर गई ? शायद यह पूछ रही
वातावरण को आम्र मंजर, कर रहे सुरभित हैं
देखो चारो ओर, शुभ्र शीतलता बिगलित है
ताड़ और वट वृक्ष ताली हैं बजा रहे
सरसों के पीले - पीले फूल शरमा रहे

सेंमल खुशी में गुलाल है उड़ा रहा
मस्ती में डूबा सोन नद शायद गुनगुना रहा
ये सारा नजारा
हवा का गुदगुदाता हुआ ये इशारा
हमको है बता रहा
देखो वसंत आ रहा !

*

बैलगाड़ी

□

चली जा रही
अपनी
मंथर गति से
आज भी
मृदु चरर - मरर की
आवाज के साथ
आगे दो बैल
कंकाल से
मानों
चकाचौंध से डर गये हों
जिस पर बैठा है
एक मानव
सिर पे मलिन पगड़ी
हाथों में रास लिए
प्राचीनता के अवशेष से !

*

अपना गाँव

□

रेल की सीटी सुन
सहसा याद आया गाँव
स्वप्न सा नजर आने लगा, हर एक ठाँव
गये जहाँ हुये कई साल
एक - एक कर बीते दिन
याद आ रहे ग्वाल - बाल
वो नदी का किनारा
उड़ते चकवा - चकई
बाँध पर का वट वृक्ष विशाल
बैलों की मस्त जोड़ी
आम्र मंजरों में कूकती कोयल
दादी से सुनना लोरी
हरी - भरी धरती, नीला गगन
अमरूद का बाग, होरहा की सुगंध
सुस्वादु दुधिया बाल
तबले पे पड़ती थाप, बजती झाल
साधुओं की मठिया
भजन गाते भक्त, बिछी है जहाँ खटिया
काश ! लौट आते दिन/वो/
अखाड़े का मलाल
पहलवान करते जोर, ठोकते ताल
चाँदी की पतली सी सड़क, ब्रह्म बाबा का मेला
क्या स्वर्ग होगा इससे बेहतर ?
जिसे न देखा किसी ने, कल्पना की है बस
जहाँ जायेंगे हम, मरने ही पर !

*

सच - झूठ

□

जब
तुझे लगे
दुनिया में सत्य
सर्वत्र हार रहा है ;
समझो
तेरे अंदर का झूठ
तुझको ही
कहीं मार रहा है !

✶

सावन की घटा

□

मैं तो घटा हूँ
सावन की सुहानो
मेरे पास आओ
झूमो नहाओ
उठो मत रूठो
ऐसे बेमानी, मैं तो घटा हूँ—
कहां से चली मैं
ना मुझको पता है
कहां को है जाना
ना इससे वास्ता है
सूखी जमीं फिर
मुझे देख तरसी
दया आई मुझको

मैं झूम बरसी
मुझको उड़ाती
हवा ये रूमानी, मैं तो घटा हूँ—
झलक पाके मेरी
कृषक मन में हरषे
हल - बैल ले के
निकले वो घर से
मचली मैं झट से
दौड़ आगे भागी
उलीचा दोनों हाथों से
खेतों में पानो
बच्चे खुश हो उछले
सोच मन में मचले
सुनेगें आज नानी से
कोई कहानी, मैं तो घटा हूँ —
राह में मुझको
दिखे सूखते वन
हरे पेड़ सरसे
देख के काले धन
मस्ती में झूम के
मोर खूब नाचे
दोड़ती थी मोरनी
मोहित पाछे - पाछे
प्रकृति हरी हो गयी
मस्त अपने में खो गई
सारा जग हँसने लगा
ये सब मुझे भला लगा

सुनी तूने मुझसे
मेरी कहानी , मैं तो घटा हूँ—

*

तुम

□

तुम कौन हो ?
जागते हुये भी
तेरी छाया साथ होती है
स्वप्न में तुमसे मेरी मुलाकात होती है
अचानक तू , पीली सरसों सी खिली आती है
कुछ कान में कहती कुछ सुन जाती है
मेरे होठों पे तेरी ही हँसी होती है
रूलाई में मेरी तू भी रोती है
मैं जानके भी तुझे, जानना नहीं चाहता
क्यूँके मेरी कविताएँ, उनकी भाव भंगिमाएँ
सबमें तेरा रूप बसा है
जो स्वप्न और यथार्थ
सब जगह छाया है
मुझमें सिमटी तेरी ही काया है
हमारी मुलाकात
इन प्रेरणाओं को तोड़ देगी
मेरी कल्पनाओं की जड़ झकझोर देगी
जिसमें तेरा रूप बसा है
जो मेरे अन्तर में धँसा है !

*

अनामिका

□

जब कभी मैंने
कुछ लिखने की कोशिश की
अक्षरों ने अपनी
गोलाई, चौड़ाई, मोटाई त्यागी,
होते चले गये
क्रमशः पंक्तिबद्ध सपाट
और आगे जो बना
तेरा ही अक्श था
ज्यों खिजा के बाद की बहार
सांवले रूखसार
भ्रम है, या है ये सच
सबकुछ बस तेरे जैसा
क्या तुझको भी कभी, कुछ लगता है ऐसा
मैं भी कभी उड़ता, सपनों में आता हूँ
चुपके से तेरी बाहों में सो जाता हूँ
स्वप्नों की दुनिया से
सच की धरती पर
जब पड़ते होंगे तेरे पाँव
तुम भी होती होगी उदास ?
ओ मेरी अनामिका
मेरी आँखों की
अनजानी तारिका !

*

गीत

□

पथिक क्यों पथ में बैठा है
जो हैं सलामत हाथ - पाँव
नहीं दूर है तेरा गाँव
फिर मंजिल के निकट मन में
अविश्वास कैसा पैठा है— पथिक…………
इरादे थे मजबूत तेरे
काटे तूने बहुत फेरे
प्रकाश के नजदीक आ
अन्धेरे का मोह कैसा है— पथिक…………
मित्र ! तेरे पहुँचे आगे
पीछे तू क्यों ओ अभागे
क्यों चुप है फिर देख
निकट कोई भी तेरे जैसा है— पथिक…………

★

पागल

□

उसने कहा, वो पागल है
मैंने भी कहा, हाँ पागल है
ओह, मैं भी पागल हूँ
दुःख है तो इसका
कि तुम पागल बनने में नाकामयाब रहे
जिन्दगी भर पागल कहलाने को बेताव रहे

मैं खुश हूँ, कि, मैं जो भी हूँ
असली हूँ
तुम हो भी तो,
नकली हो !

✶

जिजीविषा

□

पिंजरे में बराबर
बाघ और बकरी
बेबस, फांदते कंदील
करते आज्ञा स्वीकार
जिजीविषा मजबूर करती है
घास खाने को / उसे /
बांधिये डोर
ले चलिए चाहे जिस ओर !

✶

गीत

□

चित्त चंचल है आज मेरा
नींद मुझको है आती नहीं
कल्पना भी टिक पाती नहीं

शान्ति है छायी चारो ओर
मन में उठा कैसा बखेरा — चित्त··· ···
मेरे श्वास की गति सरल है
खुद में भी विश्वास अविचल है
फिर, प्रश्न कैसा गूँजता है ?
हलचल ने क्यूँ मुझको घेरा — चित्त··· ···
रक्त दूर बहता राहों पर
ध्यान नहीं देता आहों पर
है दर्द ने फिर क्यूँ भला
कर लिया मेरे मन में बसेरा — चित्त··· ···

★

युवा

□

हम न रूक सकते हैं इतनी देर तक
तूफाँ की अपने सामने क्या चले ?
भाग्य का क्यूँकर भरोसा हम करें
डगर पर अपने कदम जो बढ़ चले
आपदाओं से, हम हों भयभीत क्यूँ ?
बवंडरों की गोद में हम हैं पले
समस्या है कौन सी अब सामने
हल कि जिसका हमको ही नहीं मिले
वक्त भी जो आया आड़े हाथ तो
झुक नही सकते, टूट जायें भले
हम युवा हैं, वक्त के सरताज हैं, कौन टिक्केगा अपने मुक्काबले !

★

कदम बढाए चल

□

क्या सोचता है
मन, अरे
जो गिरा मुँह के बल
अब भी है समय
रे, अब भी तू संभल—कदम बढ़ाए चल···
मंजिल ना मिली तो क्या ?
कदम
राहों के रूबरू तो हैं
मत सोच, यूँही अनरगल
निश्चय ये करो' अटल
चाहे जो हालात हों
काली भयंकर रात हो
बढोगे ये जान
के
ईक सुबह होगी कल—कदम बढाए चल···
राह की ये ठोकरें
देंगी हृदय को चीर
सफर है लंबा
उठेगी पांवों में भी पीर
पर न हो अधीर
पर न हो विकल —कदम बढाए चल···
मैदाने जंग में
यूँही आते हैं झंझावात
बाधाएं भी रोक कर
तुमसे करेंगी बात
पर न घबरा, जी को कर कड़ा

के तेरे साथ है। तेरी आत्मा का बल
कदम बढाए चल !

✶

हम

□

लो हमने की प्रगति
अपनी सभ्यता जा रही
इक्कीसवीं सदी की ओर लपकी
मृत्यु को जीत लिया हमने
कमप्यूटर युग में प्रवेश किया सबने
आँखें खोल जरा देखो नजारा
बुलन्द कितना, अपने भाग्य का सितारा
बिजली की चकाचौंध में हम
खोजते अंधेरे का सहारा
इन्सान के आगे क्या खाकर
टिकेगा, बेचारा भगवान
वो पैदा कर सकते अब डुप्लीकेट शैतान
हमने लिया सारा रहस्य जान
चाँद पर मुर्गे दे रहे बाँग
हम तैयार शुक्र पर लगाने को छलाँग
जिसने युगों में बनाया संसार
उसे क्षण में सकते उजाड़
हटा हर दिशा से तम
किसी को नहीं गम

हर आदमी बन चुका है, एक जिन्दा बम
कोई नहीं कम, कर रहे सब
हम, हम, हम !

✶

बेरोजगार

□

तुम्हें भी दो हाथ - पाँव
उन्हें भी जरा आजमाओ
न कि बेरोजगारी की जिन्दगी भर रट लगाओ
छोड़ो इन झंझटों को
त्यागो नकली संस्था - संघो को
आत्मबल को जगाओ ठोस करो अंगों को
इतनी बड़ी दुनिया में कामों की कहाँ कमी
बशर्ते, समझो उसे छोटा नहीं
जयन्ती और चन्दे से न होगा कोई काम
नाम होगा थोड़ा ज्यादा होगे बदनाम
ऐसे कै बार दुनिया को ठग सकोगे
ईक कमीज सिलवाओगे
दो शाम भोजन कर सकोगे
फिर वही पोस्टर बेरोजगारी का लगाये
घूमोगे जिन्दगी भर यूँ ही शरमाये
पेट की आग, क्या आग से बुझ सकेगी ?
रक्त का होम होगा, और ज्यादा धधकेगी
कोयले को तू राख होने से बचाओ

आत्मा के तेज से उसे हीरा बनाओ
मिहनत की रोटी खाओ खुशी के गीत गाओ
बेरोजगारी को अपने शब्दकोष से हटाओ !

✶

दहेज प्रथा

□

कैसा है अपना समाज
लगती ना किसी को लाज ।
बजता ये कैसा साज
दहेज की रटते सब आज ।

लगी है ये कैसी आग
ना इससे बचता कोई ।
ना कोई सकता है भाग
जल रहा पूरा समाज ।

देता इसे कोई और
ले रहा कोई और है ।
पर इसका क्रूर प्रहार
करे सुकुमारों पे मार ।

लड़कों का खुला बाजार
मिलें इनके कई प्रकार ।
डाक्टर, ओरसियर, वकील
अध्यापक औ कलाकार ।

नोट पास यदि सरकार
फिर ना करें चिन्ता बेकार ।
देख सुन लें भली प्रकार
आज नकदी कल उधार ।

शायद आप हुए नाराज
अच्छा छोड़ें मोटर कार ।
टी० वि०, स्कूटर आम बात
अब तो आप हुए तैयार ।

गलती ना बस आपकी
है, करनी तेरे बाप की ।
क्योंकि इससे, अधिक माल
दिया उसने पिछले साल ।

बचने का ना है उपाय
देंगे नित वे नई राय ।
उनकी जब बारी आए
बताते खुद को निरूपाय ।

सिर सबों के चढा जनून
कागज पर बना कानून ।
जब सब सहयोग ना करें
हल न मिलेगा सम्पूर्ण ।

✶

वीरता

□

सर्प - सर्प की चिल्लाहट सुन
लोग चारो ओर भागे
कुछ कायरों के अन्दर
तब वीरता के भाव जागे
लाठी औ बल्लम ले निकले वो सबसे आगे
चक्षुश्रवा की आँखें थीं बन्द अभी
दुश्मन सिर पर पहुँचे थे तभी
कौतूहलवश उसने सिर उठाया
चक्रव्यूह में खुद को बन्द पाया
उनकी हीनता पर उसने कुछ फुंकार छोड़े
कभी आगे कभी पीछे, भागते थे ये भगोड़े
लोग चिल्लाये, अरे ये तो विषधर है
उतरता मरने पर इसका जहर है
तड़ - तड़ - तड़
लाठी पड़ने लगी जब
रूकी बौछार उसके चीथड़े उड़े जब
सबों ने मिल उसका जहर बाँटा
भागने वालों को कह कमजोर डाँटा
चले सब गर्व से सीना फुलाये
यही है वीरता, क्या ?
दें आप अपनी राय !

✶

आदमी

□

वाह रे आदमी !
जहाँ कहीं किसी ने
इन्सान बनने की कोशिश की
वहीं पाबन्दी लगा दो उसको जुबान पर
यह कहकर, के जो हैं आप हैं जनाब
आप ही जमीन आसमान
चराचर जगत के स्वामी
आप ही हैं भगवान
आपने भी खूब खाया ताव
समझा स्वयंभू खुद को
पुजवाने को हुये बेताब
फिर क्यूँ चूकते हैवान
बन्द किये गये सीखचों में आप
शुरू हुआ अखंड जाप
फिर गरूर के नशे में आप बेहोश होते चले गये
तब काफी था, दम घोंटने को, धूप का धुँआ
और अगली पीढ़ी को इंसान से बचाने को
जल ढार-ढार कर बना दिया उसने आपको पाषाण
स्थिति आपकी हुई शोकेश के हीरे के समान
सारे सवालों के जबाब मिलेंगे सप्रमाण
भक्त जब बोलेगा
नहीं जानते क्या कह गये भगवान !
भगवान पर अविश्वास
छीः छीः कहाँ गयी मेरी मति
बक्श दे मुझे/आप/ बिन मेरी कहाँ गति !

✶

बेचारा ग्रेजुएट

□

ग्राज जब
वो हुग्रा ग्रेजुएट
गले पड़ी उसके भी
बेरोजगारी की रहट
शुरू हुई दौड़
गलियों में सड़कों पर
ना जाने कितने
नेम प्लेटों से जुड़ी ग्राशाएं
हुईं ग्रनाथ
किन - किन एम० पी०, एम० एल० एज
से हुई बात
सब मोठी - तीखी बातों को
निरपेक्ष भाव से
कर लेते थे ग्रात्मसात
बहुतों महत्वपूर्ण पत्र
दिए यत्र - तत्र
पर क्या होता।
जो, ना हो पास पुष्प - पत्र
ग्रौर, ग्रफसरी की ग्राशा छोड़
दौड़ा जो चाकरी की ग्रोर
कहां मिली ठौर।
सिफारशी भरे थे चारों ग्रोर
तार - तार शरीर, वर्षों का थकाहारा
रहट खींचते - खींचते
ग्रादमी से बैल
बन गया बेचारा !

✶

बाढ़

□

उमड़ी घटा
बारिस हुई घनघोर
कोशिशें हुईं नाकाम, नदियाँ चलीं सीमा तोड़
मचा त्राहिमाम
छप्परों से चिपकें, ग्रौरत, बूढे, बच्चे
पशु - पक्षी - साँप, जल ने दिया सब पाट
कर रहे सब बाप - बाप
ग्रौर, मौज मना रहे ग्राप ?
परसेंटेज बँट रहा, हेलीकॉप्टर भर रहे उड़ान
खिंच रही तस्वीर
कागज की धरती पर, बनती स्याही की नाव
लाशों को नोचते चील, गीद्ध, कौए
कर रहे कौच - काँव
भरा ग्रपना कोषागार, छींटा मुट्ठी भर दाना
मची लूटमार
मजा ले रहे
चन्द नेता, ग्रभियन्ता, बाबू परिवार
ग्रखबारों ने छापे करूण दृश्य
सरकार ने किया एलान
हर घर से एक को दिया जायेगा काम
उधर उठ रही एक ही ग्रावाज,
सत्य है, राम नाम··· ··· ···

✶

ख्वाबों की दुनिया

□

लोहे की सलाखों पीछे
आँखों का पैनापन नापता कैदी
कुछ ढूँढ रहा था ?
आकाश की ऊँचाइयों में उड़ती
चीलों को देख
अन्तर में उठते, सवालों का जबाब
या, याद आया था उसे
गुजरे दिनों का, कोई जवाँ ख्वाब
जिसे, सच करने को बेताब
जा टकराया था
दुनिया की कठोर सच्चाइयों से
फिर, सपने क्या अपने होते !
अपने सपने हो गये
सब छूट चुका था दूर
सरूर उतर चुका था
डैने हो चुके थे चूर - चूर
शेष थी, तंग, बदबूदार कोठरी की सड़ांध
सिर पर सरसराते चमगादड़ों का साया
मुँह पर मच्छड़ों की माया
दिन, मास, वर्ष
जिसमें, जा रहा था समाया !

✶

गुनाह

□

झोपड़ा फिर जल उठा
हर हृदय पिघल उठा
पिघला नहीं, तो बस आदमी
करता भी क्या हृदय उसका
गोदरेज में बन्द था,
और झोपड़ा जलने में, लगा मिनट चन्द था
समय की पाबन्द थी
जो थी आग भी
बस्ती में फिर
मची थी भागम - भाग भी
ज्वाला जो थी, प्रचण्ड थी
हवा भी उस समय
उसके संग - संग थी
झोपड़े में था भी क्या ?
जिन्दगी थी, जिन्दगी की चाह थी
चीज जो भी थी वहाँ
बेगुनाह थी
उसे बचाने का गुनाह कौन करता भला ?
अपने ही हाथों
दबाता कौन अपना गला ?

✶

दिमाग

□

ऐ गिलहरी की बच्ची
हट जा सामने से
बिदक मत भाग
पास तेरे, क्यों नहीं है दिमाग
नाचती हैं जिसमें विषबुरनियाँ
पैदा होते हैं, हर पल जहाँ नाग
भरी हैं चिन्ताएँ जिसमें
क्षण - प्रतिक्षण जो उगलता है आग
ऐ हँसती है ! फिक्र नहीं कोई
बस फुदकती इधर - उधर
खाती है मुँगफली, कुटराती बूँट, मटर
हँसती आँखें तेरी दिन रात करती हैं प्रेम का इजहार
पर आँखों की भाषा तू कैसे पढ़ लेती है ?
उठने से पहले क्यों हो जाती है एक, दो, तीन, चार
डरती है आदमी से, औ उस पर हँसती है
बुद्धि की विरूपता पर फब्तियाँ कसती है
पर जो तेरे पास भी होता दिमाग
खो जाता चैन, चलता पता जब
है खत्म होने को जीवन की कथा अब
कैसे आदमी ने विश्व के विनाश का
रचा है उपाय
आज उसके सामने खड़ी है, कैसी
नियति भी, निरूपाय !

✶

सवालात

□

शाम
देवाराधना कर
वो चला गाँवों की ओर
सोचता समस्याओं पर
खेत सूखें हैं ।
बच्चे भूखे हैं ।
और जाने क्या ?
तभी सुनी उसने
मारो, इसी का बाप था ।
जबतक सोचता सम्भलता
दनादन छूटे कुछ सवाल
कौन है तू ?
जाति क्या है ?
और, गोली हुई हृदय के पार
वो गिरा
जमीन पर बेजान
भेड़िए मेमने की
कथा से अनजान
पथरायी आँखों में
थे कुछ सवालात
बच्चे भूखे हैं ।
खेत सूखें हैं !

✶

आतंक

□

रात दरवाजा खोल
मैंने पाया
कि कवि कमरे में
बैठा है बेहाल
पसीने से सराबोर
खिड़कियाँ खोली मैंने
कि ठंढी हवा राहत पहुँचाये कवि को
तो सशंक निगाहों से देखते
उसने कहा
श - श - श धीरे
अभी - अभी मैंने, गूँगे एकान्त
और बहरे सन्नाटे की
गुप्तगू सुनी
आतंकवादी चान्दनी भी
वृक्षों के काले सायों के साथ
मेरे विरुद्ध कोई
षडयंत्र रच रही थी
मेरे रक्षक शीशे भी टूटकर
मुझे तोड़ने को थे तैयार
तभी तुम आये मेरे यार !

★

हँसी का टुकड़ा

□

आज वो बहुत खुश थे
कोई सुन्दर सपना देखा था शायद
जिसका सरूर सर से उतरा नहीं था
चले जा रहे थे दोनों
अपने सलोने सपने पर बहस करते
गाते गुनगुनाते, सुनते सुनाते
भूल चुके थे कल की बातें
हाँ, कल भूला नहीं था उन्हें
कल, जो काला था भयानक, विकृत सिरोंवाला था
आज के सूरज पर से
जिसकी परछाइयाँ मिटी नहीं थी
तभी, दो मोटर साईकिल सवार आये
जो हँस रहे थे
अचानक उनकी हँसी छिटकी
जा लगी एक को
आह ! कितना भयानक था इस हँसी का परिणाम
कितने क्रूर थे वो आदमी बेनाम
जिनके कारण, सुहाने सपनों का सलोना संसार
धूल और रक्त में लिपटा, पड़ा था बेकार
ये कैसी हँसी थी ? जिसमें रक्त, माँस हड्डी की गंध आ बसी थी
और दूसरा कैसा मूक खड़ा था
गोया, ये उसके सपनों का ही अंश हो
पर ये एक सत्य था, कल का क्रूर सत्य जो आज भी जिन्दा था
जाने कब तक जिन्दा रहेगा इन बहेलियों की गोद में
जिन्हें, (माँ निषाद प्रतिष्ठां त्वम् गम शाश्वतीसमा)
कहनेवाला भी कोई नहीं था !

★

सवाल

□

आज भेड़िया
सड़कों पर घूमने लगा है
और, रक्षा की उम्मीद में
आदमी का घर
दिन ब दिन
माँद की शक्ल
अख्तियार करता जा रहा है
सवाल ये नहीं कि
आदम की जात, ये तब्दीली
बर्दाश्त कर सकेगी या नहीं
बल्कि ये है कि
खुले आकाश के नीचे
जीने के आदी, आदमी की आदमीयत
इस जिन्दाँ में, कहाँ तक जिन्दा रहेगी !

★

अशक्त

□

तोता राम
भरते हो सदा
मुक्त उड़ान
चिन्ताओं से कैसे
पा जाते त्राण

कैसा है, तेरा देश
क्यों नहीं तुझमें, लेश राग - द्वेष
हो कितने अशक्त
स्वजनों का भी नहीं
बहा पाते रक्त !

★

अहसास

□

वो कौन है ?
जो कदमों को गढ्ढे में गिरने से रोकता है /
हर गलती करने के पहले ही टोकता है /
चौराहे पर कौन सही राह बतलाता है ?
कौन है जो चुपके से मन में आता जाता है ?
कैसी आवाज मेरे अन्तर मन में गूँजती है ?
सूने में कोयल सी कानों में कूँजती है ?
वातावरण में फैली ये कैसी सुगन्ध है ?
किसकी कृपा से बहती हवा मन्द - मन्द है ?
स्वप्नों में अपने ये कौन छाया होता है ?
शून्य से अपना ये कैसा नाता है ?
रक्त के साथ ये कौन सनसनाता है ?
चुपके से आ दिल के तार धड़काता है ?
आकाश से मिलता मुझे कैसा ईशारा है ?
हृदय में बहती ये कैसी शीतल धारा है ?
सोये में भी साथ ये कौन जगा होता है ?

किसकी मधुरिमा से मेरा अन्तर पगा होता है ?
कोई है, जो मुझको ये रहस्य बतलाये ?
संशय हरे मेरा और खुद भी सुख पाये ?

✶

जागो

□

जागो युवा उठो ऐ दोस्तो
बहुत सोए अब नींद तोड़ दो,
जंग लगी उसे झकझोर दो
बंधनों को ए तुम बिखेर दो ।
समाज में जो लगी आग है
मानवों के मुख पे दाग है ।
विषधर जो छोड़ते झाग हैं ।
हंसों के वेष में काग हैं
इन सब की तुम पोल खोल दो
डरो नहीं जेहाद बोल दो !

✶

युवकों के प्रति

□

बह रहा ऐसे क्यों पानी सा रक्त है ?
सत्ता हो रही क्यों ऐसी अशक्त है ?
लोग हो रहे काहे को अंधभक्त हैं ?
बदल रहे हम या बदल रहा वक्त है !

कन्धे पर भारत के उठा कैसा फोडा है ?
उगलता जहर जो बराबर थोड़ा - थोड़ा है,
निहत्थों को मारने का ढंग कैसा भौड़ा है ?
पड़ोसी क्यों राह पर अटका रहा रोड़ा है ?

आज इस तरह अपना देश क्यों अशान्त है ?
कैसी अग्नि से जलता अपना हर प्रान्त है ?
भाई - भाई का क्यूँ करता प्राणान्त है ?
देश का युवक क्यों ऐसा मतिभ्रान्त है ?

एक ही माँ के बेटे क्यों आपस में लड़ रहे ?
झूठी मृग तृष्णा पीछे कैसे हैं मर रहे ?
हम आप भला क्यों ऐसे हाथ मल रहे ?
इतनी चोट खाकर भी क्यों नहीं सम्हल रहे ?

धर्म का धर्म से कैसा ये विरोध है ?
भाई का भाई से कैसा प्रतिशोध है ?
अधर्म क्यों खड़ा बन के अवरोध है ?
आज का आदमी क्या इतना अबोध है !

देश के युवक तुम अब भी न जागे अगर
फोड़े को दाग जलाया यदि ना जहर
टूटेगा बन तुम पर हो ये कहर
बिराने होते जायेंगे ऐसे ही सारे शहर

जागो और देखो कि न भारत खंड - खंड हो
अपने में खुद तुम शक्ति प्रचण्ड हो
तुम हो अमिट अमर ज्योति अखंड हो
भारतीय आकाश के जलते मार्तण्ड हो

दुश्मनों के नापाक इरादों को तोड़ दो
सोये हुये भारत की जड़ झकझोर दो
बलाओं की बाँह पकड़ के मरोड़ दो

दिखा दो कि भारतोय हम अब भी महान हैं
बल - बुद्धि में न कोई अपने समान है
ये जमीं हमारी हमारा आसमान है
पहले भारत माता है तब हमारी जान है

भूत था हमारा ही हमारा वर्तमान है
देश हित में सदा अर्पित हमारा प्राण है !

✶

तत् त्वम् असि ।

☐

अपने मैं को
मारो नहीं
उसके बढ़ते कदम
तुम उखाड़ों नहीं
उसे
इतना, विस्तृत हो जाने दो
कि, वो
तुम्हारा तुम हो जाए
उसका मेरापन
शून्य की सर्वव्यापकता में
जाकर गुम हो जाए !

✶

✶ ✶ ✶

-- जब

तुझे लगे

दुनिया में सत्य

सर्वत्र

हार रहा है;

समझो

तेरे अन्दर का

झूठ

तुझको ही

कहीं मार रहा है !

– इसी संग्रह से

मुद्रक:– लक्ष्मी प्रेस, सहरसा